इस्लाम में पापों की अवधारणा (3 का भाग 2)

विवरण: इस पाठ मे हम पाठकों को पापों, उनके प्रकार, और उनकी गंभीरता से परिचित कराएंगे और बताएंगे की उनके लिए क्षमा कैसे मांगे और अगले जीवन में ये व्यक्ति को कैसे प्रभावित करेंगे।

द्वारा Imam Mufti (© 2013 NewMuslims.com)

प्रकाशित हुआ 08 Nov 2022 - अंतिम बार संशोधित 07 Nov 2022

श्रेणी: पाठ >पूजा के कार्य > विभिन्न अनुशंसित कार्य

उद्देश्य:

- बड़े और छोटे पापों की परिभाषा जानना।
- यह जानना कि बड़े पाप किसी व्यक्ति को कब और कैसे अविश्वासी बनाते हैं।
- यह जानना कि बड़े पापों को कैसे क्षमा किया जाता है।
- क्षमा न किए गए बड़े पापों के साथ मरने वाले व्यक्ति के भाग्य को जानना।
- बड़े पापों की संख्या जानना।
- जानना कि कब छोटे पाप बड़े पापों में बदल जाते हैं।

अरबी शब्द:

- *[illegible]-[illegible]* (एकवचन कबीरा) - बड़े पाप।
- *[illegible]-[illegible]* (एकवचन सग़ीरा) - छोटे पाप।
- *[illegible]* - एक ऐसा शब्द जिसका अर्थ है अल्लाह के साथ भागीदारों को जोड़ना, या अल्लाह के अलावा किसी अन्य को दैवीय बताना, या यह विश्वास करना कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य में शक्ति है या वो नुकसान या फायदा पहुंचा सकता है।
- *[illegible]* - अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर सुन्नत शब्द के कई अर्थ हैं, हालांकि आम तौर पर इसका अर्थ है जो कुछ भी पैगंबर ने कहा, किया या करने को कहा।
- *[illegible]* - पश्चाताप।
- *[illegible]* - प्रभुत्व, नाम और गुणों के संबंध में और पूजा की जाने के अधिकार में अल्लाह की एकता और विशिष्टता।

पापों को उनकी गंभीरता के आधार पर बड़े और छोटे पापों में वर्गीकृत कयिा जाता है। बड़े पापों को कबा-ईर (एकवचन कबीरा) कहा जाता है और इसका उल्लेख क़ुरआन 4:131, 42:37, 53:32 में कयिा गया है। छोटे पाप, या सगा-ईर (एकवचन सगीरा) का उल्लेख क़ुरआन 18:49 में कयिा गया है। बड़े और छोटे पापों सहति सभी कर्मों को दर्ज कयिा जाता है और ये रकिॉर्ड न्याय के दनि व्यक्ति को दएि जाएंगे (क़ुरआन 18:49, 54:2-3)।

बड़े पापों की परभिाषा[1]

कोई भी पाप जसिके लएि क़ुरआन या सुन्नत इस दुनयिा में सजा का प्रावधान करती है जैसे कि हत्या, व्यभचिार और चोरी; या जसिके बारे में परलोक में अल्लाह के क्रोध और दंड का ख़तरा है, साथ ही ऐसा कोई भी पाप जसिके अपराधी को हमारे पैगंबर ने बुरा कहा है।

छोटे पाप की परभिाषा

छोटा पाप हर वो पाप है जसिके लएि इस जीवन मे नर्धिारति सजा नहीं है या अगले जीवन में इससे संबंधति कोई खतरा नहीं है।

क्या बड़े पाप व्यक्ति को अवश्विासी बनाते हैं?

पाप आस्था को कम करता है। एक मुसलमान की आस्था उसके गुनाहों के अनुपात में कम हो जाता है। फरि भी, न तो बड़े और न ही छोटे पाप आस्था को पूरी तरह से खत्म करते हैं। पाप एक मुसलमान को नास्तकि नहीं बनाता जब तक कि वह व्यक्ति पाप को जायज़ नहीं मानता। वह पाप को जायज़ मान सकता है क्योंकि या तो वह ये मानने से इनकार करता है कि अल्लाह ने इसे मना कयिा है या वह मुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) की पैगंबरी पर पर संदेह करता है। कसिी भी मामले में, जब कोई पाप क़ुरआन को नकारने और पैगंबर मुहम्मद को खारजि करने के समान है, तो उस पाप को करने पाप कएि बनिा ही अवश्विासी हो जाता है। उदाहरण के लएि, यदि कोई व्यक्ति जोर देकर कहता है कि अल्लाह ने व्यभचिार की अनुमति दी है, जबकि वे जनता है कि इसे क़ुरआन में मना कयिा गया है, तो वह व्यक्ति अवश्विासी हो जाता है। अन्यथा, हम लोगों को उनके द्वारा कएि गए पाप के कारण गैर-मुस्लमि नहीं समझते हैं।

इस बात का प्रमाण क़ुरआन और पैगंबर की परंपराओं में मलिता है कि पाप करने वाले व्यक्ति को मुसलमान माना जाता है:

1. क़ुरआन कहता है:

"नि:संदेह अल्लाह ये नहीं क्षमा करेगा कि उसका साझी बनाया जाये और उसके सवाि जसि चाहे, क्षमा कर देगा।" (क़ुरआन 4:48)

2. जो कोई भी अल्लाह के साथ शरि्क कएि बनिा मर जायेगा वह स्वर्ग में दाखलि होगा।[2]

3. तौहीद पर वश्विास रखने वाला व्यक्ति व्यभचिार और चोरी करने पर भी स्वर्ग में प्रवेश करेगा।[3]

पैगंबर के समय में एक शराबी था। एक बार जब उसे सजा दी गई तो एक मुसलमान ने उसे कोसा। पैगंबर

ने उस मुसलमान को उस साथी को कोसने से मना कयिा और कहा: 'उसे मत कोसो, क्योंकि वह अल्लाह और उसके दूत से प्यार करता है।'[4] उस शराबी का अल्लाह और उसके पैगंबर में वश्विास के कारण, वह जो बड़ा पाप कर रहा था उससे उसकी पूरी आस्था खत्म नही हुई।

बड़े पाप कैसे क्षमा कयि जाते हैं?

बड़े पाप नम्निलखिति तरीकों से क्षमा कयि जा सकते हैं:

ए) ईमानदारी से पश्चाताप करने से, जसिमें पाप को छोड़ना, उसे करने के लिए पश्चाताप करना, और इसे फरि कभी न करने का संकल्प करना शामलि है। यदि पाप में दूसरों के प्रति अन्याय शामलि है, तो उपरोक्त के अलावा, उसे उनके अधकिार या संपत्ति को भी बहाल करना चाहिए या उनसे क्षमा मांगनी चाहिए।

जब अल्लाह अपने दासों में से एक से इस ईमानदार पश्चाताप को देखता है - एक दास जो वास्तव में डर और आशा से अपने ईश्वर की ओर मुड़ता है - तो अल्लाह न केवल उसके पाप को क्षमा करता है, बल्कि उन पापों को अच्छे कामों मे बदल देता है। यह अल्लाह की असीम कृपा और दया है। अल्लाह ऐसा शरि्क, हत्या और व्यभचिार के पापों का उल्लेख करने के ठीक बाद कहता है, वह कहता है: "उसके सवि, जसिने क्षमा याचना कर ली और ईमान लाया तथा कर्म कयि अच्छा कर्म, तो वही हैं, बदल देगा अल्लाह, जनिके पापों को पुण्य से तथा अल्लाह अति क्षमी, दयावान् है" (क़ुरआन 25:70)। यह आशीर्वाद केवल उसी के लिए है जो आस्था रखता है, जसिका पश्चाताप सच्चा है, और जो अच्छे कर्म करने का प्रयास करता है।

बी) अल्लाह की शुद्ध कृपा, उदारता और दुआ से। इसलिए अल्लाह जसि चाहेगा उसे माफ करेगा, व्यक्ति के वास्तव में पश्चाताप कए बनिा।

सी) कुछ वद्विानों के अनुसार हज करने जैसे कुछ कृत्यों के करने से।

उस व्यक्ति का भाग्य जो बड़े पापों को करते हुए मर जाता है

वह व्यक्ति जो बड़े पापों का पश्चाताप कयि बनिा मर जाता है, वह परलोक में अल्लाह की दया पर है। यदि अल्लाह चाहे तो पहले उसे उसके पापो के हसिाब से सजा दे और फरि स्वर्ग में भेज दे। अल्लाह उसे आसानी से भी माफ कर सकता है और बनिा कसिी सजा के सीधे स्वर्ग भेज सकता है।[5]

बड़े पापों के उदाहरण

दलि के कुछ बड़े पाप हैं घमंड, पाखंड, ईश्वर की दया से नराश होना और ईश्वरीय योजना से सुरक्षति महसूस करना, लालच और ईर्ष्या।

जुबान के कुछ बड़े पाप झूठ बोलना, झूठे वादे करना, बनिा ज्ञान के बोलना, पवत्रि महलिाओं की नदिा करना, शेखी बघारना और दूसरों का उपहास करना है।

अन्य बड़े पापों में जातवािद (अन्य लोगों की जाति को नीचा दखिाना), रश्वितखोरी, माता-पति की अवज्ञा करना, रश्तिेदारों के साथ संबंध तोड़ना, पड़ोसी को नुकसान पहुंचाना, जानवरों के साथ दुर्व्यवहार करना, ड्रग्स और मादक पेय लेना, व्यभचिार और चोरी करना शामलि हैं।

छोटे और बड़े पापों और बड़े पापों की संख्या के बीच संबंध

बड़े पाप के कतिने प्रकार हैं? इनकी संख्या चार सौ से सात सौ तक होती है। एक प्रसद्धि वद्विान,

इमाम अध-धाबी ने 70 पापो को बड़े पापों की सूची मे रखा है। एक अन्य विद्वान इमाम हयतामी ने लगभग 476 प्रमुख पापों का वर्णन किया है। पैगंबर मुहम्मद के प्रसिद्धि साथी इब्न अब्बास (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा कि प्रमुख पाप "7 की तुलना में 700 के करीब हैं, सिवाय इसके कि कोई भी पाप 'बड़ा' नहीं होता है जब इसके लिए क्षमा मांग ली जाये (यह तब होता है जब व्यक्ति उचित पश्चाताप (तौबा) कर ले), इसी तरह कोई पाप 'छोटा' नहीं होता है यदि कोई इसे करता रहे।"[6]

छोटे पाप इस तरह बडे पाप बन सकते हैं:

- पाप मे लगे रहना और बार-बार करते रहना।
- पाप को छोटा आंकना।
- पाप का जश्न मनाना और उस पर गर्व करना।
- पाप की घोषणा करना और दूसरों को बताना।

फुटनोट:

[1] अल-धहाबी तहकीक मुही-उद-दीन मिस्तु द्वारा लिखित *[illegible]-[illegible]*, पृष्ठ 36

[2] *[illegible] [illegible]*

[3] *[illegible] [illegible]*

[4] *[illegible] [illegible]-[illegible]*

[5] *[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible]*, खलील अ-हरस, पृष्ठ 190-192

[6] *[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible]*, पृष्ठ 257

इस लेख का वेब पता:
http://www.newmuslims.com/hi/lessons/217

कॉपीराइट © 2011-2022 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।

ajsultan